RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 47 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 3 फरवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 47, 31 जनवरी-3 फरवरी 2019 तदनुसार 21 माघ, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तेरे बिना मुक्त आनन्द नहीं पाते

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते।
आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर्न्यग्ने होता प्रथमः सदेह।।

-ऋ० ७।११।१

शब्दार्थ-हे **अग्ने** = ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! तू **अध्वरस्य** = मार्गदर्शक का **महान्** = बड़ा **प्रकेतः** = उत्तम बोधक **असि** = है, अथवा **अध्वरस्य** = अहिंसारहित मङ्गल कार्यों का महान् ज्ञानदाता है। **अमृताः** = मुक्त आत्मा **त्वत्+ऋते** = तेरे बिना न **मादयन्ते** = आनन्द नहीं पाते। हे प्रभो! तू **विश्वेभिः** = सम्पूर्ण **देवैः** = दिव्य गुणों के साथ **सरथम्** = रमण-साधन के समेत **आ+ याहि** = सर्वत्र प्राप्त है। हे भगवान्! तू ही **इह** = इस संसार में **प्रथमः** = सबसे पहला **होता** = होता होकर **नि+सद** = नितरां रहता है।

व्याख्या-मोक्ष की अभिलाषा मनुष्यों को इस कारण होती है कि उस दशा में दुःख से सदा छुटकारा होकर आनन्द मिलता है। आनन्द-प्राप्ति के लिए ही समस्त प्राणियों की चेष्टा है। इसका ठीक-ठीक उपदेश कोई मनुष्य नहीं कर सकता। इसका यथार्थ ज्ञान भगवान् ही करा सकते हैं। वेद ने कहा है कि भगवान् ही-

'महान् अध्वरस्य प्रकेतः' = मार्गप्रदर्शन का महान् उत्तम बोधक है।

अतः उससे प्रार्थना की है-

'आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैः' = रमणसाधन-समेत सभी दिव्य गुणों के साथ तू हमें प्राप्त हो, क्योंकि-

यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति।

-ऋ० ७।११।२

जिसके हृदय में दिव्य गुणों के साथ भगवान् आ विराजते हैं, उसके दिन सुदिन हो जाते हैं।

भगवान् का सङ्ग प्राप्त होते ही दुःख-दारिद्रय, असामर्थ्य आदि सभी नष्ट हो जाते हैं और सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, शक्ति की प्राप्ति होती है। उसकी कृपा के बिना ये सब नहीं मिलते-**'न ऋते त्वदमृता मादयन्ते'**= तेरे बिना मुक्त आनन्द नहीं पाते। किसी में आनन्द है ही नहीं, पाएँ कैसे? भगवान् आनन्दधाम है, अतः-**'त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते'** [ऋ० १।५९।१]-तुझमें सभी मुक्त आनन्द पाते हैं। प्रतिदिन की प्रार्थना में भी आता है-**'यत्र देवा अमृतमानशानाः'** [यजुः० ३२।१०]-जिस भगवान् में रहकर सभी जीवन्मुक्त अमृत=मोक्षानन्द का उपभोग करते हैं।

जब भगवान् से ही मोक्षानन्द मिलता है, तब तो ऋषियों का कहना युक्तियुक्त है कि-**'तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुंचथ। अमृतस्यैष सेतुः'** (मुण्ड० २।२।५)-उसी एक व्यापक परमात्मा को जानो, पहचानो, दूसरी बातें छोड़ो, वही अमृत का सेतु=दाता है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

ले.-कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबलों को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना नहीं मानते थे। वे लिखते हैं ''जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपौड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।''

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और आर्यत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियां जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य-असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद का निम्न श्लोक उद्धृत किया है-

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिन्हों को धर्म से नहीं जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है-'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है-आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं-''देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी पर लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।''

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य-असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य-सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे-''मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियां निकलवाना है, ईंट-पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-फोड़ना नहीं है।

सन् 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया-मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

सन 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं ''मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।'' महर्षि का यह मत सभी ऋषि-मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं-**बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।** अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं-**यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः।** अर्थात् जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वर कृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

महाशय धर्मपाल जी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

आर्य जगत के भामाशाह एवं गौरव महाशय धर्मपाल जी को पदमभूषण पुरस्कार के लिए चुना जाना आर्य जगत के लिए गौरव की बात है। महाशय धर्मपाल महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सच्चे सिपाही हैं। सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को अपनाकर जी रहे हैं। गीता के **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन** वाक्य को आदर्श मानकर उनका जीवन कर्मशील रहा है। 95 वर्ष की उम्र में भी वे निरन्तर सक्रिय रहते हैं। वैदिक आदर्शों के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले महाशय धर्मपाल जी आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि-**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविच्छेत् शतं समाः** अर्थात् मनुष्य को कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए। महाशय धर्मपाल जी का आदर्श मूल मन्त्र यही है। तभी तो इतनी अधिक आयु होते हुए भी निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा महाशय धर्मपाल जी को पदमभूषण पुरस्कार के लिए चयनित करना आर्य जगत का सम्मान है। जो कार्य उन्होंने अपने जीवन में किये हैं और निरन्तर कर रहे हैं उसके फलस्वरूप वे सही अर्थों में इस सम्मान के अधिकारी है।

महाशय धर्मपाल जी का जन्म पाकिस्तान के सियालकोट में 1923 में हुआ था। उनके पिता महाशय चुन्नीलाल जी मसालों की दुकान चलाते थे जिसका नाम महाशियां दी हट्टी था। इसी के नाम पर एमडीएच पड़ा। विभाजन के पश्चात भारत आये महाशय धर्मपाल ने दिल्ली में मसाले की दुकान शुरू की । शुरूआती दौर में उन्होंने कारोबार को स्थापित करने के लिए संघर्ष किया, कभी दिल्ली में तांगा भी चलाया, लोगों के घरों में जाकर मसाले बेचे परन्तु कभी भी संघर्ष करने से हार नहीं मानी। संघर्ष भरा जीवन व्यतीत किया परन्तु कभी भी हार नहीं मानी। कर्म करना अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाया और आज ऊँचाई के चरम शिखर पर हैं। शास्त्रकार ने ठीक ही कहा है कि-

उद्योगिनं पुरूषं सिंहमुपैति लक्ष्मी,
दैवेन देयमिति कापुरूषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरू पौरूषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति तर्हि कोऽत्र दोषः।।

अर्थात् जो भाग्य के भरोसे न बैठकर पूर्ण पुरूषार्थ के साथ अपने कार्य की सिद्धि के लिए परिश्रम करता है, वही जीवन में सफलता को प्राप्त करता है। महाशय धर्मपाल जी ने भी पूर्ण पुरूषार्थ के साथ अपने व्यापार को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया। आज उन्नति के जिस शिखर पर वे मौजूद हैं उसके पीछे उनका पुरूषार्थ और समर्पण है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

मिटा दे अपनी हस्ती को यदि कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर गुले-गुलजार होता है।।

अपने कार्य के प्रति समर्पण और त्याग की भावना से महाशय धर्मपाल जी का नाम शीर्ष उद्योगपतियों में शुमार है।

महाशय धर्मपाल जी का कारोबार जैसे-जैसे बढ़ने लगा उनकी सामाजिक गतिविधियां भी बढ़ती गई। अनेकों संस्थाएं, गुरूकुल, आर्य समाजें, गौशालाएं, अनाथालय महाशय धर्मपाल जी की छत्रछाया में दिन-दुगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहे हैं। महाशय धर्मपाल जी जहां मसालों के लिये विश्व भर में प्रसिद्ध हैं वहीं उससे भी ज्यादा समाज सेवा के लिए जाने जाते हैं। शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर वेद की इस उक्ति को महाशय धर्मपाल जी ने अपने जीवन में पूर्ण रूप से चरितार्थ किया है। गरीबों की सेवा करना इनका परम धर्म है। भारतवर्ष में चलने वाले सभी गुरूकुलों, समाजसेवी संस्थाओं को इनका संरक्षण प्राप्त है। महाशय जी के आशीर्वाद से सभी संस्थाएं समाज सेवा को अपना आदर्श मानकर उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं। धर्म के मार्ग पर चलते हुए महाशय जी ने जो अर्थ अर्जित किया है उस अर्थ के द्वारा अपने सभी कार्यों को सिद्ध किया है। शास्त्रों में धन की तीन गतियां कही गई हैं-दान, भोग और नाश। महाशय धर्मपाल ने इन तीनों में से धन की सर्वोत्तम गति दान का चयन किया है।

महाशय धर्मपाल जी की यज्ञ के प्रति अत्यधिक आस्था है। वे प्रतिदिन यज्ञ करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में जब विशाल सामूहिक यज्ञ किया गया तो उसमें महाशय धर्मपाल जी का विशेष योगदान था। इस यज्ञ में प्रयोग होने वाले तांबे के हवनकुण्डों के लिए इन्होंने 75 लाख रूपये दिये थे। महाशय धर्मपाल जी यज्ञमय जीवन जीने वाले सरल व्यक्तित्व के स्वामी हैं। यज्ञ की भावनाओं को अपने जीवन में चरितार्थ किया है। समर्पण और त्याग की भावना इन्होंने यज्ञ से सीखी है। उसी के परिणामस्वरूप महाशय धर्मपाल जी की यज्ञ की तरह सुगन्धि सर्वत्र फैल रही है।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के द्वारा जब महाशय धर्मपाल जी को पदमभूषण पुरस्कार के लिए चयनित किया तो सम्पूर्ण आर्य जगत में हर्ष की लहर दौड़ गई। महाशय धर्मपाल को मिलने वाले इस पुरस्कार से हर व्यक्ति अपने आपको सम्मानित महसूस कर रहा है। महाशय धर्मपाल जी आर्य जगत की शान है, युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। जीवन से निराश किसी भी व्यक्ति के लिए महाशय जी का जीवन आदर्श हो सकता है। शून्य से जीवन की यात्रा प्रारम्भ करके सर्वोच्चता के शिखर पर किस प्रकार पहुँचा जाए इसके लिए महाशय जी के जीवन से बढ़कर और कोई उदाहरण नहीं हो सकता। जीवन के इस पड़ाव पर पहुँचकर भी वे निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। 27 जनवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा रोहतक में आयोजित आर्य महासम्मेलन में भी महाशय धर्मपाल जी ने सभी आर्यजनों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब महाशय धर्मपाल जी को पदमभूषण पुरस्कार के लिए चयनित करने पर भारत सरकार के राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी का हार्दिक धन्यवाद करती है। महाशय धर्मपाल जी सम्मान महर्षि दयानन्द की विचारधारा एवं आर्य समाज का सम्मान है। उनको सम्मानित किए जाने से सम्पूर्ण आर्य जगत स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से तथा पंजाब की सभी आर्य संस्थाओं की ओर से महाशय धर्मपाल जी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। आपका शुभाशीर्वाद शताधिक वर्षों तक हम सब पर बना रहे, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

लिकोरिया-भिण्डी की सूखी जड़ १०० ग्राम, पिन्डालू सूखा १०० ग्राम दोनों का चूर्ण कर गाय के दूध के साथ मिश्री मिलाकर पियें।

लू-१. खूब पानी पीकर बाहर निकलें लू नहीं लगेगी।

२. कच्चा आम (कैरी) को भूभल में भूनकर या पानी में उबाल कर थोड़ा नमक गुड़ १५ ग्राम पानी २०० ग्राम मिलाकर पिलाने से लू शान्त हो जाती है।

वज्र देह-चित्रक की छाल का चूर्ण ५ ग्राम प्रतिदिन गौ दुग्ध के साथ सेवन करने से देह विशाल एवं बज्र तुल्य दृढ़ होती है।

वायु गोला-सज्जी खार ३ ग्राम पुराना गुड़ ३ ग्राम दोनों को पीस रगड़ गोली बना लें। प्रतिदिन प्रातः गर्म पानी से खायें। १ माह प्रयोग करें।

विष हरण-१. नियम पूर्वक चन्द्रोदय रस १ वर्ष प्रयोग किया जाय तो मनुष्य पर किसी भी प्रकार का विष असर नहीं करेगा।

२. आक का दूध प्रयोग करें। जब खुशक हो जाय तब तक

३. चाहे कैसा भी विष खा लिया उतना ही भूना हुआ सुहागा खाने से विष नष्ट हो जायेगा।

४. रीठे के छिलकों के चूर्ण में पानी मिलाकर गोली बनायें। १ १ गोल गौ दुग्ध के साथ लें। पागल कुत्ता, गीदड़, सर्प विष दूर होता है।

विशुचिका (हैजा)-१. एक बड़ी बोतल में २०० ग्राम शुद्ध तिल का तेल भर लें।

विधि-बोतल को हिला-२ कर ३०-३० ग्राम दवा एक-एक घन्टे बाद पिलायें रोग का वेग ज्यादा हो तो ६०-६० ग्राम दवा दो-दो घन्टे के अन्तर से पिलायें।

२. प्याज का रस १०० ग्राम कपूर १ ग्राम दोनों को मिलाकर शीशी का मजबूत कार्क लगा दें। आवश्यकता पड़ने पर ५ ग्राम दबा मिश्री मिलाकर पिलायें। मरणासन्न रोगी १ दिन में ही ठीक हो जायेगा।

३. सत्य अजवान १० ग्राम सत्व पोदीना १० ग्राम कपूर २० ग्राम, लोंग का तेल ५ ग्राम सोंफ का तेल ५ ग्राम सबको मिला धूप में रख दें यह अमृत धारा बन गई ५ बूंद गुलाब जल में आधा घन्टे बाद दें अतिलाभ प्रद है।

४. फिटकरी का पानी पिलाने से हैजे के रोगी को लाभ मिलता है।

पथ्य-तेल गुड़, खटाई का प्रयोग न करें।

श्वेत प्रदर-१. केला और घी मिलाकर सुबह खायें। संयम का पालन करें २ माह नीम के पत्तों को पानी में गर्म करके योनि को धोयें।

२. बरगद के पत्ते छाया में सुखाकर चूर्ण कर लें सम भाग मिश्री मिला ५ ग्राम नित्य प्रातः सांय गौ दुग्ध से पियें।

शक्ति हीनता-छोटी हरड़ का सेवन दूध के साथ प्रातः सांय करें। शतावर चूर्ण गौ दुग्ध से लें।

शीघ्र प्रसव-अपामार्ग की जड़ (चिरचिटा) स्त्री की कमर में बांधने से बच्चा शीघ्र उत्पन्न होता है। इसे प्रसव होते ही खोलकर बाहर फेंक दें अन्यथा गर्भाशय बाहर निकल पड़ेगा।

शीत ज्वर-भांग का चूर्ण गुड़ में लपेट कर खायें। पारी के दिन के प्रयोग से पारी का ज्वर न आयेगा।

शुगर-वेलपत्र चबाकर नित्य प्रातः सांय पानी २०० ग्राम पियें।

सन्नि पात ज्वर-नीला थोथा ५० ग्राम इसको १०० दिन तक निरन्तर नींबू के रस में घोंटते रहें (अर्ध नारी महेश्वर रस) बस दवा तैयार है। आवश्यकता पड़ने पर दवा आँखों में लगा दें। उस समय ज्वर विदा हो जायेगा।

शक्ति वर्धक-१. गूलर के कच्चे फलों का चूर्ण १०० ग्राम समभाग मिश्री मिलाकर रख लें २ ग्राम मात्रा में गौ दुग्ध से लें।

२. शतावर का चूर्ण मिश्री सम भाग मिलाकर रख लें गौ दुग्ध से सेवन करें।

शीत पित्ती-१. नीम का तेल कपूर मिलाकर मालिश करें।

श्वास-१. पीपल छोटी, कायफल, काकड़ा, सिंगी तीनों वस्तुऐं समभाग लेकर बारीक पीस छान चूर्ण बना लें। ५ ग्राम शहद से चाटें। अति लाभ प्रद है।

२. ताजा मुनक्का रात्रि को पानी में भिगों दें। प्रातः इनको खाकर ऊपर से जिस पानी में मुनक्का भिगोये थे पी लें। १ माह सेवन करें।

३. छोटी हल्दी धोकर गाय के दूध के साथ गर्म करके लें। मात्रा ५ ग्राम प्रातः सांय।

शोथ (सूजन)-१. भैंस का मक्खन या खोया दूध मिलाकर लेप करें। सूजन हट जायेगी।

२. सोंठ, पीपल छोटी समभाग चूर्ण बना लें। ५ ग्राम दवा गुड़ में मिलाकर लें। सूजन निश्चय दूर हो जायेगी।

३. प्रतिदिन गौ मूत्र पीने से हर प्रकार की सूजन दूर होती है।

४. बरगद के पत्ते घी में चुपड़कर बाधें।

संग्रणी (पेचिस)-छोटी दुद्धी पानी में धोकर ५ ग्राम पीसकर छाछ में मिलाकर पिलायें ५ मिनट में लाभ होगा। चाहे कैसे भी दस्त हों। अनुभूत है।

सिर दर्द-१. आक के पत्तों का रस २-२ बूंद नथनों में टपकायें पुराने सिर दर्द के लिए रामबाण है।

२. अमर तेल (आकाश वेल) ५ ग्राम पान में घोंटकर १० दिन पिलायें दर्द नाम को नहीं रहेगा। वकरी के दूध में घोंटकर पिलाने से अति लाभ होता है।

३. आक की कोंपल ऊपर वाली गुड़ में मिलाकर सूर्योदय से पहले खायें।

स्वर भेद (गला बैठना)-१. शीतल चीनी मुख में रख कर चूसें।

२-आधा ग्राम हींग गर्म पानी में घोलकर रख लें आवश्यकता पड़ने पर ३-४ बार दिन में निगलें। गला ठीक हो जायेगा।

सन्धिवात (जोड़ों का दर्द)-१. कुचला शुद्ध, काली मिर्च दोनों समभाग लेकर।

सवल वाय-नीम गिलोय रस चीन ग्राम लाहौरी नमक १ ग्राम दोनों को घोलकर दिन में ३ वार पियें। चूर्ण बना लें। बारीक पीस कर अदरक के रस में घोंटें फिर गोली मटर के बराबर बना कर शीशी में रख लें प्रातः सांय १-१ गोली पानी के साथ सेवन करें या दूध होता बहुत ही उत्तम है।

सिर में चक्कर आना-१. आंवले का चूर्ण पीसकर कपड़ छन कर सम भाग मिश्री मिला के शीशी में रख लें। प्रातः सांय १ गिलास में मिला के शर्बत बना कर पियें।

२. पीपल के कोमल पत्ते छाया में सुखाकर कूटपीस कर वारीक चूर्ण कपड़ छन कर समभाग मिश्री मिलाकर शीशी में रख लें। प्रातः सांय ५ ग्राम औषधि गौ दुग्ध धारोष्ण के साथ मिलाकर पियें। फिर इसका चमत्कार देखें। इसके सेवन से उन्माद, पागल-पन, मूर्छा, मृगी, भ्रम स्मृती की कमी, नजला, जुकाम, सिर दर्द आदि अनेक रोग दूर होते हैं। सेवन कीजिए और साधुओं के गुण गाइए। १ माह सेवन करें।

३. गिरी बादाम १० ब्राह्मी बूटी ५ ग्राम काली मिर्च ७ दाने। बादाम और ब्राह्मी बूटी रात्रि को पानी में भिगो दो। प्रातः बादाम का छिलका उतार कर ब्राह्मी बूटी को अच्छी प्रकार धोकर सिल पर लोढ़े से घुटाई करें। तीनों को घोंटपीस कर मिश्री मिलाकर ४० दिन पियें। गर्मियों का सुन्दर श्रेष्ठ पेय है। इससे दिमागी कमजोरी के कारण होने वाले सिर दर्द दूर होता है।

स्मरण शक्ति बढ़ाना-१. दस बादाम की मिंगी रात्रि को पानी में भिगो दो सुबह छिलका उतार कर घोंटे। १ तोला मक्खन और मिश्री मिलाकर चाटें। १ माह सेवन करें। बच्चे जो पढ़ेगे, वह जीवपन भर याद रहेगा। ब्रह्मचर्य अनिवार्य है।

२. गोरख मुण्डी बूटी का चूर्ण सम भाग मिश्री मिलाकर गौ दुग्ध में मिलाकर पियें।

३. रूमी मस्तगी और देशी शक्कर समभाग लेकर बारीक चूर्ण कर लें। प्रातः सांय ५ ग्राम ठन्डे पानी से सेवन करें।

सुइयाँ चुभना-सेल खड़ी १०० ग्राम लेकर इसे ग्वार के पाठे के रस में घोंटकर भस्म बना लें। यह भस्म ५० ग्राम फिटकरी भुनी हुई ५० ग्राम गेरू और समुद्र झाग ५०-५० ग्राम सब वस्तुओं को कपड़ छन कर शीशी में रख लें।

विधि-५. ग्राम दवा प्रातः दूध की कच्ची लस्सी के साथ सेवन करें। जिसके शरीर में सुइयां चुभती हों, वदन में चका चोंटी लग जाती है, चिनगारियाँ निकलती है उनके लिए अदभुत औषधि है १ माह सेवन करें।

स्त्रियों के छाती के रोग-१. लहसन की जड़ की छाल पानी में पीसकर कई वार लेप करें। सूर्खी और सूजन दूर होगी।

२. अनार की छाल पानी में पीसकर लेप करें १५ में दिन छातियां सखत हो जाती हैं।

३. नाग वला की जड़ को चबायें।

४. हल्दी तथा धतूरे की जड़ पीसकर लेप करें।

५. वरगद की दाढ़ी के रेशे छाया में सुखा कर पानी में पीसकर लेप करें। छातियाँ सख्त हो जाती हैं।

(क्रमशः)

यजुर्वेद में गृहस्थ का धर्म

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

पदार्थ-(यस्मात्) जिस परमेश्वर से (परः) उत्तम (अन्यः) और दूसरा (न) नहीं (जातः) हुआ और (यः) जो परमात्मा (विश्वा) समस्त (भुवनानि) लोकों को (आविवेश) व्याप्त हो रहा है। (सः) वह (प्रजया) सब संसार से (संरराणः) उत्तम होता हुआ (षोडशी) सौलह कलाओं का स्वामी (प्रजापतिः) सम्पूर्ण संसार का स्वामी परमेश्वर (त्रीणि) तीन (ज्योतिषि) ज्योति अर्थात् सूर्य, विद्युत और अग्नि को (सचते) सब पदार्थों में स्थापित करता है उसकी उपासना करें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती यजुर्वेद अध्याय 2 मंत्र संख्या 2 के भावार्थ में लिखते हैं-परमेश्वर सब मनुष्यों के लिए उपदेश करता है कि हे मनुष्यों। तुमको वेदी आदि यज्ञ के साधनों का सम्पादन करके सब प्राणियों के सुख तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए अच्छी प्रकार क्रिया युक्त यज्ञ करना और सदा ही सत्य ही बोलना चाहिए और जैसे मैं न्याय से सब विश्व का पालन करता हूँ वैसे ही तुम लोगों को भी पक्ष पात छोड़कर सब प्राणियों के पालन से सुख का सम्पादन करना चाहिए।

इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 1 मंत्र संख्या 23 में यज्ञ के विषय में कहा गया है-

मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरूर्यज्ञो-ऽतमेरूर्यजमानस्य प्रजा भूयात्।

त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा।। यजु. 1.23

पदार्थ-हे विद्वान् पुरूषों। तुम (अतमेरूः) श्रद्धालु होकर (यजमानस्य) यज्ञमान के यज्ञ के अनुष्ठान से (मा भेः) भय मत करो और उससे (मा, संविक्थाः) मत विचलित होओ। इस प्रकार (यज्ञः) यज्ञ करते हुए तुमको उत्तम से उत्तम (अतमेरूः) ग्लानि रहित श्रद्धावान् (प्रजा) सन्तान (भूयात्) प्राप्त हो और मैं (त्वा) भौतिक अग्नि को उक्त गुण युक्त तथा (एकताय) सत्य सुख के लिए (द्वितीय) वायु तथा वृष्टि जल की शुद्धि तथा (त्रिताय) अग्नि कर्म और हवि होने के लिए (संयौमि) निश्चय करता हूँ।

भावार्थ-मंत्र में कहा गया है कि किसी भी मनुष्य को यज्ञ, सदाचार और विद्या के ग्रहण से डरना नहीं चाहिए। क्योंकि इन्हीं से अच्छी सन्तान और सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

गृहस्थ को अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा देनी चाहिए जिसका उनका जीवन भी सफल हों और वे समाज के विकास में भागीदार भी बन सकें।

मा सुभित्था मा सुरिषोऽम्ब धृष्णु वीरयस्व सु।

अग्निश्चेदं करिष्यथः।।

यजु. 11.68

पदार्थ-हे (अम्ब) माता। तू हमको विद्या से (मा) मत (सुभित्थाः) छुड़ा और (मा) मत (सु रिषः) दुःख दे। (धृष्णु) दृढ़ता से (सुवीरयस्व) सुन्दर आरम्भ किये कर्म की समाप्ति कर। ऐसा करते हुए तुम माता और पुत्र दोनों (अग्निः) अग्नि के समान (च, इदम्) करने योग्य इन सब कर्मों को (करिष्यथः) आचरण में लाओ।

शिक्षा बालक, बालिका दोनों को दी जानी चाहिए। इस विषय में बालिका को मुख्य रूप से किस विषय की शिक्षा दें, यजुर्वेद का कथन है-

ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः।

अयं वो गर्भऽऋत्वियः प्रत्नं सधस्थमासदत्।। यजु. 11.48

पदार्थ-हे स्त्रियों। तुम लोग जो (ओषधयः) सोमलता आदि ओषधियां हैं जिनसे (अयम्) यह (ऋत्वियः) ठीक वस्तु काल को प्राप्त हुआ (गर्भः) गर्भ (वः) तुम्हारे (प्रत्नम्) प्राचीन (सधस्थम्) नियत स्थान गर्भाशय को प्राप्त होवे उन (पुष्पवतीः) श्रेष्ठ गुणों वाली (सुपिप्पलाः) सुन्दर फलों से युक्त ओषधियों को (प्रतिगृभ्णीत) निश्चय करके ग्रहण करो।

भावार्थ-कन्याओं को वैद्यक शास्त्र अवश्य पढ़ाया जाना चाहिए।

सन्तानों पुरूप्रियोऽग्ने त्वं तरा मृधः।। यजु. 11.72

पदार्थ-हे (अग्ने) अग्नि के समान तेजस्वी पति देव। (रोहिदश्वः) अग्नि आदि पदार्थों से युक्त वाहनों से युक्त (पुरीष्यः) पालने में श्रेष्ठ (पुरूप्रियः) बहुत मनुष्यों से प्रीति रखने वाले (त्वम्) आप (इह) इस गृहस्थाश्रम में (परावत) दूर देश से (परमस्याः) अति उत्तम गुण, रूप और स्वभाव वाली कन्या की कीर्ति सुनकर (आ गहि) आइये और उसके साथ (मृधः) दूसरों के पदार्थों की आकांक्षा करने वाले शुत्रओं का (तर) तिरस्कार कीजिए।

यजुर्वेद अध्याय 3 मंत्र संख्या 21 के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं-

जहाँ विद्वान् लोग निवास करते हैं वहाँ प्रजा विद्या उत्तम शिक्षा और धन वाली होकर निरन्तर सुखों से युक्त होती है। इससे मनुष्य को ऐसी इच्छा करनी चाहिए कि हमारा और विद्वानों का नित्य समागम बना रहे अर्थात् हम लोग कभी उनसे विरोध कर अलग न होवे।

घर के दैनिक वातावरण को आनन्दमय बनाने के लिए गृहस्थ को समय समय पर अपने सम्बन्धियों एवं मित्रों को निमंत्रित करना चाहिए।

यस्ते ऽअश्वसनिर्भक्षो यो गोसनिस्तस्य तऽइष्टयजुष स्तुत-स्तोमस्य।

शस्तोक्थस्योपहू तस्योपहू तो भक्षयामि।। यजु. 8.12

पदार्थ-हे प्रिय वर पुरूष वर। जो आप (उपहूतः) मुझ से सत्कार को प्राप्त होकर (अश्वसनिः) अग्नि आदि पदार्थ अथवा घोड़ों और (गोसनिः) संस्कृत वाणी, भूमि और विद्या प्रकाश आदि अच्छे पदार्थों के देने वाले (असि) हैं। उन (शस्तोक्थस्य) प्रशंसित ऋग्वेद के सूक्त युक्त (इष्ट यजुषः) इष्ट सुखकर यजुर्वेद के भाग युक्त वा (स्तुतस्तोमस्य) सामवेद के गान के प्रशंसा करने वाले (ते) आप का (यः) जो (भक्षः) चाहना से भोजन करने योग्य पदार्थ हैं उस को आपसे सत्कृत हुई मैं (भक्षयामि) भोजन करूं तथा हे प्रिय सखि। जो तू अग्नि आदि पदार्थों वा घोड़ों के देने और संस्कृत वाणी, भूमि विद्या, प्रकाश आदि अच्छे अच्छे पदार्थ देने वाली है उस प्रशंसनीय : क्सूक्त, यजुर्वेद भाग से स्तुति किये हुए सामगान करने वाली तेरा जो यह भोजन करने योग्य पदार्थ है उसको अच्छे मान से बुलाया हुआ मैं भोजन करता हूँ। गृहस्थ को पुरूषार्थ करके ऐश्वर्य शाली जीवन जीना चाहिए।

आ पवस्व हिरण्यवदश्वत्सोम वीरवत्।

वाजं गोमन्तमाभर स्वाहा।।

यजु. 8.63

पदार्थ-हे ऐश्वर्य की चाहना करने वाले गृहस्थ। तू (स्वाहा) सत्यवाणी अथवा सत्य क्रिया से (हिरण्यवत्) स्वर्ण आदि पदार्थों के तुल्य (अश्ववत्) अश्व आदि पशुओं के समान (वीरवत्) प्रशंसित वीरों के समान (गोमन्तम्) उत्तम इन्द्रियों से सम्बन्ध रखने वाले (वाजम्) अन्नादिमय यज्ञ का (आभर) आश्रय रख और उससे संसार को (आ) अच्छे प्रकार (पवस्व) पवित्र कर।

इस प्रकार यजुर्वेद में गृहस्थ धर्म का विस्तृत वर्णन हुआ है परन्तु पूरा वर्णन किया जाना एक छोटे से लेख में संभव नहीं है।

आर्य समाज वेद मन्दिर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर राज नगर, बस्ती बावा खेल जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 8 फरवरी 2019 से 10 फरवरी 2019 तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री तथा श्री सुरेश शास्त्री जी के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री सुरिन्द्र आर्य जी के सुमधुर भजन होंगे। दिनांक 8 व 9 फरवरी को रात्रि 8:00 से 10:00 बजे तक वेद कथा एवं भजन होंगे। मुख्य कार्यक्रम 10 फरवरी रविवार को होगा। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों महानुभावों से प्रार्थना है कि इस उत्सव पर सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें। आपके आगमन से उत्सव की शोभा बढ़ेगी।

-निर्मल आर्य मन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर

मानव की अशान्ति का कारण

ले.-स्वामी वेदानन्द सरस्वती उत्तरकाशी

आज के युग की प्रधान समस्या तनाव है। व्यक्ति का मानसिक तनाव उसके शरीर में स्नायविक तनाव को उत्पन्न करता है। मानसिक और स्नायविक तनाव शरीर और मन में अनेकों बीमारियों को जन्म देते हैं। मानव जितना अशान्त है, पशु-पक्षियों में उसका शतांश देखने को नहीं मिलता। पशुओं में संवेग उपजते हैं। वे भी कभी-कभी और बहुत थोड़े समय के लिये। किन्तु मनुष्य वर्षों-वर्षों तक तनावग्रस्त जीवन को जीता नजर आता है। उस तनाव के कारण उसकी नींद और भूख भाग जाती है। उसे तनाव भी अनेकों प्रकार के होते हैं। कहीं काम का, कहीं क्रोध का, कहीं लोभ व परिग्रह का।

आदमी परिग्रह की दौड़ में पड़ा हुआ है। घरों के अन्दर पदार्थों के अम्बार लगे हुए हैं। पदार्थों से व्यक्ति बड़े-बड़े ड्राईंग हाल सजाने में लगा हुआ है। पदार्थों की बहुलता ने व्यक्ति की तृष्णा को बढ़ाकर उसे पागल बना दिया है। तृष्णा एक ऐसी प्यास है जो कभी पदार्थ से नहीं बुझती। तृष्णा की प्यास आशा के बल पर ज़िन्दा रहती है। आदमी आशाओं के पुल बनाता है कि आज में लखपति हूं कल करोड़पति हो जाऊंगा और फिर अरबपति व खरबपति। व्यक्ति का जैसे-जैसे परिग्रह बढ़ता है वैसे ही उसकी तृष्णाएं भी बढ़ती हैं। तृष्णा की अतृप्ति से व्यक्ति पागल हो जाता है। अमेरिका जैसे धनी देशों में 40 प्रतिशत व्यक्ति मानसिक रोगों का शिकार हैं। वहां भौतिक विकास चरम सीमा पर है। साथ ही साथ व्यक्ति में वैषयिक तृष्णा आकाश को छू रही है। वैषयिक तृष्णा को विषय भोग के द्वारा शान्त नहीं किया जा सकता। वह तो पानी की आग के समान है। पदार्थों में यदि आग लग जाये तो उसे पानी के द्वारा बुझाया जा सकता है, किन्तु यदि पानी में ही आग लग जाये तो उसे पानी के द्वारा भी नहीं बुझाया जा सकता। जब पदार्थों के परिग्रह से अतृप्ति पैदा हुई है तो उसे पदार्थ नहीं मिटा सकता। किसी स्प्रिंग को यदि सीमा के अन्दर खींचा जाता है तो वह छोड़ने पर सामान्य स्थिति में आ जाता है, किन्तु यदि सीमाओं को पार कर खींचा जाता है तो वह अपनी आकुञ्चन क्षमता खो देता है।

कहीं भी देखो इस संसार में मानव को दैविक, दैहिक, भौतिक ये विविध ताप सता रहे हैं। मानव शान्ति की तलाश में भटक रहा है। लेकिन सुख और शान्ति पदार्थों के परिग्रह से कभी नहीं मिल सकती। व्यक्ति यदि स्थाई सुख और शान्ति चाहता है तो उसे विचार करना होगा कि हमारे दुःख और अशान्ति का मूल कारण क्या है। कारण का पता लगा कर यदि हम उसका निवारण कर सकें तो दुःख और अशान्ति का स्थायी हल हो जायेगा और व्यक्ति को स्थायी सुख और शान्ति उपलब्ध हो जायेगी।

मानव के दुखों का मूल कारण मानव के सूक्ष्म शरीर में खड़े अविद्या आदि क्लेष हैं। जब तक चित्त भूमि में क्लेषों का बीज रहेगा मानव कभी भी तनाव आदि दुःखों से मुक्ति नहीं पा सकता। यदि उन क्लेषों को मिटा दिया जाये तो व्यक्ति स्थायी आनन्द और चिरशान्ति से भर जायेगा। क्लेषों के निदान का एकमात्र उपाय योगाङ्गों का अनुष्ठान है। महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित अष्टाङ्ग योग यम-नियम से आरम्भ होता है। जो लोक व्यवहार में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पाठ पढ़ाता है। यह शिक्षा ऋषि मुनियों की शिक्षा है।

भोग प्रवृत्ति में जीवन जीने वाला व्यक्ति अपरिग्रह की नहीं परिग्रह की ही शिक्षा देता है। बैंक बैंकिंग का जन्म ही व्यक्ति की परिग्रह वृत्ति से हुआ है। ब्याज का लालच दिखाकर सरकार भी व्यक्तियों को उसी जाल में फंसाती है। मोदी सरकार ने भी अस्तित्व में आते ही देहातों में बैंक खोलने और उनमें प्रत्येक व्यक्ति की खातेदारी का ऐलान किया है। जिससे व्यक्ति का दो पैसा छिपाने का अवसर ही समाप्त हो जायेगा। कमाओ और खाओ की बजाय कमाओ और जमा करो की सीख सरकार दे रही है। क्योंकि सरकार के मन्त्रिमण्डल में कोई भी व्यक्ति वेदों का पारङ्गत विद्वान नहीं है। सर्वमेध यज्ञ करने वाले राजा दिलीप जैसे राजा-महाराजा अब केवल श्रुति का ही विषय बनकर रह गये हैं। परिग्रह की दौड़ में पड़ा हुआ व्यक्ति योगाभ्यास नहीं कर सकता। बिना योगाभ्यास के सुख शान्ति भी नहीं मिल सकती।

आश्चर्य की बात है कि योग शिविरों का आयोजन करने वाले आजकल के धर्माचार्य ध्यान और समाधि की बातें तो करते हैं किन्तु वे साधकों के लिये यम नियमों के पालन को आवश्यक नहीं मानते। याद रखिये योगाभ्यास का प्रथम चरण ही यम है। यमों को महाव्रत की संज्ञा दी गई है। योग व्यक्ति को उसे उसकी आत्मा का साक्षात् करा देता है। तत्वदर्शी योगियों के अनुसार आत्मा न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है। यह किन्हीं भौतिक पदार्थों के मेल का परिणाम नहीं है और न ही यह किन्हीं जैविक या रासायनिक परिवर्तनों का परिणाम है। यह नित्य और शाश्वत् है। शरीर के साथ आत्मा का योग वियोग ही जन्म और मरण कहलाता है। ये जन्म मरण की घटनायें परमेश्वर जीवात्मा के बहुआयामी विकास के लिये उत्पन्न करता है। जीवन अनन्त है। उस मंगलमय परमेश्वर के हाथों से ही यह हमारे जीवन का पुष्प खिलता है। आत्मा के भोग और अपवर्ग की प्राप्ति हेतु यह सब खेल खेला जा रहा है।

जो व्यक्ति जीवन को ठीक से समझकर धर्म का आचरण करते हैं उनके जीवन का पुष्प पूरा खिल उठता है और उस पुष्प की सुगन्ध चारों ओर फैल जाती है। धार्मिक व्यक्ति को परमात्मा प्रकृति के एक एक परमाणु में ओत प्रोत नजर आने लगता है। धार्मिक व्यक्ति को सत्य के दर्शन हो जाते हैं। इस जीवन में परम सत्य की अनुभूति करना मुक्ति की ओर पदार्पण करना है।

परमात्मा का दर्शन, उसकी अनुभूति इसी जीवन में होती है। जो इस जीवन में उसके दर्शन से चूक जाता है वह सदा के लिये चूक जाता है। उसका सब कुछ खो जाता है। इस जीवन में यदि हम धर्म का आचरण नहीं करते तो मृत्यु के पश्चात् हम उसी लोक को प्राप्त होते हैं जिसका हमने इस जीवन में बीज बोया है।

यदि हमें अपना जीवन प्रिय है तो धर्म भी प्रिय होना चाहिये। धर्म को जीवन से अलग करके नहीं देखा जा सकता। आज के युग में धर्म के प्रति अरुचि का कारण जीवन के प्रति उदासीनता है। जीवन के प्रति आज व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण राष्ट्र उदासीन है। मानव जाति स्वयं मानव जीवन के प्रति उदासीन हो रही है। गृहस्थ में अनैच्छिक और अनपेक्षित सन्तानों का जन्म, नित्य प्रति हजारों हजारों भ्रूण हत्याएं और गर्भपात जैसे दुष्कृत्य जीवन के प्रति उदासीनता का पर्याप्त से अधिक प्रमाण हैं। मानवेतर प्राणियों में ऐसे पापों की एक भी मिसाल सारे भूमण्डल पर खोजने पर भी नहीं मिलेगी। जिस जीवन की बुनियाद ही मदोन्मत्त होकर रखी जायेगी, उसमें प्रेम के दर्शन ही नहीं हो सकते। आज के समाज में इसी प्रकार के व्यक्तियों का बाहुल्य है। मन्दिर मस्जिद आदि जो धार्मिक स्थान माने जाते हैं वहां जाकर देखिये बच्चे और युवक कहीं नजर ही नहीं आते। वहां पर जीवन से निराश कुछ बूढ़े लोग ही बैठकर दुनियां के रोने रो रहे होते हैं। धर्म सुखों का आधार है फिर धार्मिक स्थन खाली क्यों पड़े हैं? मन्दिरों में तो भीड़ लगनी चाहिये थी। इसका करण धर्मगुरुओं का दोहरा व्यक्तित्व है। वे बातें तो धर्म की करते हैं और स्वयं जीवन अधार्मिक ही जीते हैं। धार्मिक जीवन का सौन्दर्य उनके पास नहीं रह गया है। लोगों को भी वे जीवन के प्रति उपरामता और उदासीनता का ही उपदेश देते हैं। जिस धर्म ने जीवन को खिलना नहीं सिखाया वह धर्म नहीं पाखण्ड है। व्यास जी के शब्दों में-

'उर्ध्वबाहु विरौम्येष न च कश्चिच्छ्रणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किन्न सेव्यते।।'

अर्थात् हम भुजा उठाकर उद्घोष करते हैं कि धर्म से ही अर्थ, काम सब प्राप्त होते हैं। परलोक भी धर्म से ही निर्मित होता है। इसलिये सदा धर्म का सेवन करना चाहिये। सत्य के पालन में प्रमाद क्यों?

पृष्ठ 2 का शेष-शिक्षा-आर्य मान्यताओं के पुनः...

बहुत विस्तृत था।''भ्रन्ति निवारण'' पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं-''मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।''

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में-23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्याचार से कुछ-कुछ छुटकारा मिला है। ''मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।''

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार-''इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।''

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी-''हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थ-प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।''

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था-हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।

महान कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा हैं कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है।''मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएं अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

येनेदं भूतं भुवनं भविषय्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

-यजु० ३४.४

भावार्थ-हे मनुष्यो! जो मन योगाभ्यास के साधनों से सिद्ध हुआ, भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान इन तीनों कालों का ज्ञाता, सब सृष्टि का जानने वाला, कर्म उपासना और ज्ञान का साधन है, ऐसे मन को कल्याण में ही लगाना चाहिए।

यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

-यजु० ३४.५

भावार्थ-हे जिज्ञासु पुरुषो! हम सब लोगों को योग्य है कि जिस मन के स्वस्थ और शुद्ध रहने से, सत्संग, वेदविचार और ईश्वरध्यानादि हो सकते हैं, अशुद्ध अस्वस्थ मन से नहीं ऐसे मन की अशुद्ध भावना को हटाकर वेदविचार और ईश्वर-ध्यान में लगावें, जिससे हमारा कल्याण हो।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मन- शिवसङ्कल्पमस्तु।।

-यजु० ३४.६

भावार्थ-रथ का सारथी जैसे घोड़ों को चलाता है, ऐसे ही यह मन इन्द्रियों का संचालक है। इस मन में सदा शुभ संकल्प होने चाहियें, जैसे उत्तम सारथी, घोड़ों को लगाम द्वारा अपने वश में करता हुआ अभिलषित स्थान को पहुँच जाता है। ऐसे ही मन आदि इन्द्रियों को अपने वश में करता हुआ मुमुक्षु पुरुष मुक्तिरूपी अभिलषित धाम को पहुँच जाता है। मन भी बड़ा ही बलवान्, बूढ़ा न होने वाला है, इसको अपने वश में करने के लिए मुमुक्षु पुरुष को बड़ा यत्न करना चाहिये।

परितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका द्वारा आयोजित पर्यावरणीय परीक्षा एवं पर्यावरणीय रंग भरो प्रतियोगिता-2018 का परितोषिक वितरण समारोह आर्य समाज मंदिर फाजिलका में 17 जनवरी, 2019 को अत्यन्त हर्षोल्लास से डॉ. रेणु की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्यातिथि श्री सुभाष सेतिया और विशिष्ट अतिथि श्री प्रदीप अरोड़ा तथा सुभाष कटारिया ने अपने-अपने आसन को सुशोभित किया।

परीक्षा संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री ने बताया कि पर्यावरणीय परीक्षा प्राइमरी, मिडिल, मैट्रिक, सैकेण्डरी तथा कॉलेज स्तरीय पांच ग्रुपों में आयोजित की गई। जिसमें दो कॉलेज और 16 स्कूलों के 678 छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए। सभी ग्रुपों के प्रथम स्थान प्राप्त छात्र क्रमशः ऐंजल, पायल, काव्या, तानिया, अर्पित सेतिया, इशिका छाबड़ा, पीयूष शर्मा रहे।

पर्यावरणीय रंग भरो प्रतियोगिता में 14 स्कूलों के 939 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। यह प्रतियोगिता प्रीनर्सरी, नर्सरी, एल.के.जी, यू के जी, पहली और दूसरी कक्षा तक छः ग्रुपों में सम्पन्न हुई। सभी ग्रुपों में क्रमशः कविनेश, अर्जुन, देवान्त, गुरनूर, परी, करिश्मा कुमारी प्रथम स्थान पर रहे।

सभी ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त एवं प्रोत्साहित छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। इनमें सर्वहितकारी विद्या मंदिर फाजिलका द्वारा संचालित 9 निःशुल्क शिक्षा प्रदत्त बाल संस्कार केन्द्रों के 300 छात्र-छात्राओं की परीक्षा एवं प्रतियोगिता वैदिक शिक्षा परिषद् द्वारा निःशुल्क आयोजित की गई।

शास्त्री जी के अनुसार इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृति उत्पन्न करना है। समारोह की अध्यक्ष डॉ. रेणु घूडिया, मुख्यातिथि श्री सुभाष सेतिया तथा विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष कटारिया और श्री प्रदीप अरोड़ा ने छात्रों को पुरस्कार प्रदान करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अन्त में शास्त्री जी ने सभी पर्यवेक्षकों, शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों का सहयोगार्थ हार्दिक आभार व्यक्त किया। शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-वेदप्रकाश शास्त्री

महर्षि दयानन्द ने लोगों को वेदों की ओर लौटने को प्रेरित किया:सरला भारद्वाज

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा के तत्वावधान में स्व. मनोहर लाल जी चोपड़ा की स्मृति में आर्य माडल सी.सै.स्कूल फगवाड़ा के सभागार में वेद प्रचार दिवस का आयोजन किया गया जिसमें वरूण चोपडा, कामिनी चोपड़ा, रचना सौंधी, सुपथ सौंधी, राकेश शर्मा, रेणु शर्मा, राजिन्द्र एवं ऋतु सौंधी ने मुख्य यजमान के रूप में हवन यज्ञ में हिस्सा लिया। इस मौके पर आर्य समाज के भजनोपदेशक श्री सुरिन्द्र सिंह गुलशन ने भजनों के माध्यम से ईश्वर भक्ति, वेद एवं राष्ट्रीय एकता व अखंडता का गुणगान किया। मुख्य वक्ता प्रो. सरला भारद्वाज जी ने सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानंद तथा उन सभी शहीदों को नमन किया जिन्होंने महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चलते हुये धर्म एवं देश पर अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने लोगों को वेदों की ओर लौटने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने वेदों का हवाला देकर नारी सम्मान, दलितों को समान अधिकार, तथा जात-पात के बंधनों से मनुष्य जाति को मुक्त कराने के जो लक्ष्य समाज के सामने रखे हैं उनको पूरा करने की जिम्मेदारी हम सब की है।

इस दौरान स्थानीय विधायक सोम प्रकाश जी ने स्वर्गीय मनोहर लाल चोपड़ा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कहा कि जो अपनी जिन्दगी में दूसरों के काम आया करते हैं, लोग उन्हीं को मरणोपरान्त भी याद करते हैं। स्कूल प्रिंसीपल नीलम पसरीचा एवं प्रबन्धक सुरिन्द्र चोपड़ा जी ने बच्चों को सम्मानित किया। डा. यश चोपड़ा जी ने मंच का कार्यभार संभाला। प्रधान डा. कैलाश भारद्वाज जी ने आयोजन के अंत में आभार व्यक्त करते हुये के.के.सरदाना एवं सुरिन्द्र चोपड़ा का धन्यवाद किया जिनका आर्य समाज को सदैव स्नेह एवं आशीर्वाद प्राप्त है। इस अवसर पर शिव हांडा, रमेश सचदेवा, बलराज खोसला, सरला चोपड़ा, सुशील कोहली, सुमनदीप स्याल, कीमती शर्मा, बलदेव शर्मा, सुरन्द्रि चोपड़ा, बल्लु वालिया, सतीश बग्गा, मधु भूषण कालिया, तिलक राज कलूचा, सावित्री सरदाना, जोगिन्द्र पाल, सुनीता चोपड़ा, राजेश पलटा, रोहित प्रभाकर, आशु पुरी, सुनील चम, तेजस्वी भारद्वाज, मोनिका सभ्रवाल, डा. तनवी, चोपड़ा अरोड़ा सहित समूह स्कूल स्टाफ उपस्थित था। कार्यक्रम के अंत में ऋषि भोज की सभी ने भूरि भूरि प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में करीब 250 लोगों ने शिरकत की। वेद प्रचार हेतु वैदिक साहित्य भी वितरित किया गया।

डा. यश चोपडा महासचिव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन दिनांक 27 जनवरी 2019 को सभा कार्यालय पं.जगदेव सिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ रोहतक में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य, सन्यासी, विद्वतजन, हरियाणा के राज्यपाल माननीय सत्यदेव नारायण आर्य, हिमाचल के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी, आचार्य आर्य नरेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, पद्मभूषण से सम्मानित श्री महाशय धर्मपाल जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट पधारे हुये थे। इस अवसर पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आर्य जनता को सम्बोधित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी। चित्र दो में पद्मभूषण से सम्मानित महाशय धर्मपाल जी के साथ चित्र खिंचवाते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री श्री विनय आर्य जी।

जिला आर्य सभा लुधियाना के पदाधिकारियों की घोषणा

दिनांक 23 जनवरी 2019 को जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने पदाधिकारियों की घोषणा की। जिला आर्य सभा लुधियाना की बैठक में सम्मिलित पदाधिकारी एवं अन्य आर्यजन। जबकि चित्र दो में बैठक के पश्चात सभी पदाधिकारी मिल कर जलपान करते हुये।

जिला आर्य सभा लुधियाना की साधारण सभा में प्रदत्त अधिकारों के आधार पर दिनांक 23 जनवरी 2019 को जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने जिला आर्य सभा की कार्यकारिणी के अधिकारियों की घोषणा की। उन्होंने श्री अरुण थापर जी को संरक्षक घोषित किया। जिला आर्य सभा लुधियाना की कार्यकारिणी के नाम इस प्रकार से हैं: संरक्षक श्री अरुण थापर जी, प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी, उप प्रधान श्री रवि महाजन, उप प्रधान श्री मनीष मदान, उप प्रधान श्री रणवीर शर्मा, उप प्रधान श्री राजेन्द्र कौड़ा, उप प्रधान श्री वजीर चंद शर्मा जी। महामंत्री श्री विजय सरीन जी, मंत्री श्री रमेश सूद जी, श्रीमती सविता शर्मा जी मंत्री, श्री अम्बरीश कुमार जी मंत्री, श्री जनक राज भगत मंत्री, कोषाध्यक्ष श्री अरुण सूद जी, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री श्रवण बत्रा जी, अन्तरंग सदस्य श्रीमती रमेश महाजन, श्री सुनील शर्मा, श्री जय प्रकाश पनेसर।

ईश्वर स्तुति के पश्चात जिला आर्य सभा लुधियाना की बैठक शुरू हुई। महामंत्री श्री विजय सरीन जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जो 3 फरवरी 2019 को बरनाला में हो रहा है, उस के विषय में बताते हुये कहा कि जिला आर्य सभा लुधियाना ने शहर से अधिक से अधिक संख्या में आर्यजनों के पहुंचने की व्यवस्था की है। आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्थापित आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तथा वेद की पवित्र वाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए ही इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द जी का जीवन वैदिक संस्कृति एवं वेदों के प्रति समर्पित रहा है। वेदों के प्रचार एवं प्रसार को स्थाई रूप देने के लिए ही उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वेद प्रचार और वेद पर आधारित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करना है। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्डों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेषमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। उन्होंने बताया कि हम सब ने अधिक से अधिक संख्या में वहां पहुंच कर अपने संगठन का परिचय देना है। उन्होंने बताया कि जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा दो बसों को बुक कर लिया है। उन्होंने बताया कि यह सारी बसें 3 फरवरी को प्रात: 9.00 बजे आर्य कालेज गर्ल्ज विभाग लुधियाना से चलेंगी। इसलिये लुधियाना के सभी आर्यजनों से निवेदन है कि वह समय पर पहुंच कर अपनी सीट सुरक्षित कर लें। शांति पाठ के पश्चात जिला आर्य सभा लुधियाना की बैठक सम्पन्न हुई। इसके पश्चात सभी ने मिल कर जलपान किया। जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने आए हुये सभी सदस्यों का धन्यवाद किया।

विजय सरीन महामंत्री
जिला आर्य सभा लुधियाना

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।